पानी बचाओ, धरती बचाओ

खेती

Kheti Advisor

एडवाइज़र

मासिक पत्रिका

मार्च 2016 । चैत्र- वैसाख । वर्ष-02 । अंक 07 । www.advisorpublications.co.in

6वां जट्ट एक्सपो 2016

30 सितंबर, 1 और 2 अक्तूबर

मूल्य ₹20

प्राकृतिक कृषि को समर्पित सग्गी दम्पति - कमालपुर

Bhavarlal Hiralal Jain

12.12.1937 - 25.02.2016

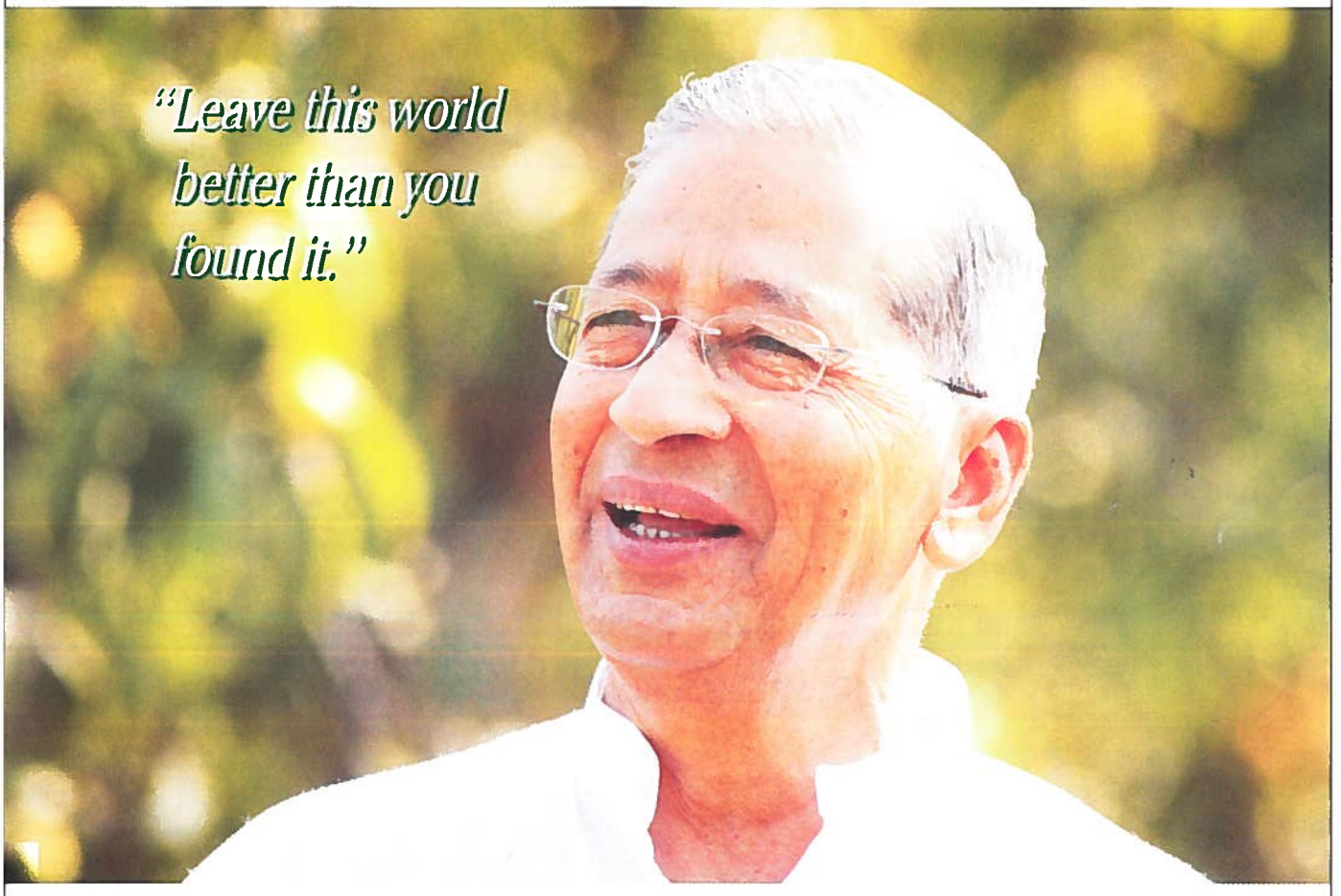

"मुक्तिसंगोऽनहंवादी धृत्युत्साहमन्वितः।
सिद्ध्यसिध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते।।"

(भगवद् गीता १८वा अध्याय, २६वा श्लोक)

वृथा अहंकाराशिवाय, यशापयशापासून अलिप्त राहून, मुक्तपणे, खंबीरपणे व उत्साहाने कर्तव्यपालन करणाऱ्यालाच सात्त्विक म्हणतात.

वृथा अहंकार, यश-अपयश इन से परे - स्वतंत्रता, अटलता और उत्साह से कर्तव्य करनेवालाही सात्त्विक कहलाता है।

The detached and liberated performer, devoid of false ego, endowed with fortitude and great enthusiasm, unaffected by success and failure, is considered noble.

Bansilal, Dalichand, Kantilal,
Ashok-Jyoti, Anil-Nisha, Ajit-Shobhana, Atul-Bhavna,
Athang, Amoli, Abhedya, Ashuli, Arohi, Abhang, Aatman, Anmay and the entire Jain Family and Associates.

BHAVARLAL AND RANTABAI JAIN FOUNDATION

JAIN
Jain Irrigation Systems Ltd.
Small Ideas. Big Revolutions.®

GANDHI RESEARCH FOUNDATION

पद्मश्री डॉ. भवरलाल जैन, संस्थापक

'जैन समूह' जलगांव का निधन

कार्य से बेहतर कुछ भी नहीं है

जलगांव जैन समूह जलगांव के संस्थापक, चेयरमैन श्री भवरलाल हीरालाल जैन, (आयु 79 वर्ष) का अल्प बीमारी से 25 फरवरी 2016को मुम्बई के एक चिकित्सालय में निधन हो गया।

छोटी सी अद्भुत कल्पना से महान क्रांति लाने वाले इस व्यक्तित्व ने जो भी उपदेश दिया, उसे स्वयं भी, गत 5 दशकों से अपने समूचे व्यवसाय की बुनियाद बनाया है।

उनका विश्वास था कि, प्रत्येक किसान एक उद्यमी है और उसे सम्मानपूर्वक उच्च आय प्राप्त होनी चाहिए। 25 लाख किसानों को यह सुनिश्चित करने हेतु उन्होंने कड़े परिश्रम किए। वह एक स्वप्नद्दष्टा एवं कर्मयोगी थे। कम्पनी उनके बताए गए पथ पर हमेशा चलने के लिए शपथबद्ध है। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ शनिवार दि. 27 फरवरी 2016को दोपहर 3 बजे जैन हिल्स, जलगांव, में किया गया।

एक छोटे शहर के उद्यमी द्वारा अरबों डालर वाली ग्रामीण बहुराष्ट्रीय संस्था को स्थापित किया गया। विपरीत परिस्थितियों में संघर्षशील व कठोर परिश्रमी कृषकों के, वे आदर्श एवं उत्साही पथप्रदर्शक एवं समर्थक थे। एक समर्पित पर्यावरणविद् व दयावान सामाजिक योद्धा अब हमारे बीच नहीं रहे।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभावान व्यक्तित्व का शब्दों में वर्णन कैसे किया जा सकता है। केवल कठोर परिश्रम के बल पर सभी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुए इस 'माटी के लाल' द्वारा कम्पनी को विश्व की दूसरे नम्बर की ड्रिप सिंचाई कम्पनी के शीर्ष स्थान पर पहुंचाया। कृषि क्षेत्र में किसी अकेले व्यक्ति द्वारा लघु एवं सीमांत कृषकों के उत्थान हेतु आधुनिक व सटीक तकनीक प्रदत्त किए जाने का अतुलनीय योगदान देश का एकमात्र उदाहरण है। उन्होंने अपने व्यवसाय को सदैव नीतिपरक एवं निष्ठापूर्वक रखते

कुछ नहीं करना था उनके लिए अभिशाप

हुए कृषक कल्याण का नज़रिया अपनाया। उनका यह मानना था कि जो भी तकनीक लाई जाए, वह छोटे-छोटे कृषकों द्वारा अपनाए जाने योग्य हो और उन्होंने ऐसा ही किया।

वह एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने काम से, मेहनत से कभी मुंह नहीं मोड़ा। हमेशा यह विश्वास रखा कि कार्य से बेहतर कुछ भी नहीं है। कुछ भी नहीं करना उनके लिए एक अभिशाप था। यदि जैन इरीगेशन फैक्टरी या अनुसंधान व प्रदर्शन क्षेत्र पर कोई काम नहीं हो तो फिर सामाजिक कार्य, शिक्षा उनके हृदय में समाई हुई थी। उन्हें युवाओं की अच्छी शिक्षा व बेहतर सामाजिक, सामयिक मूल्यों की प्रासंगिकता पर विश्वास था, जबकि आज धीरे-धीरे पाश्चात्य संस्कृति बढ़ती जा रही है।

उनके द्वारा जलगांव में स्थापित आवासीय स्कूल 'अनुभूति' में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा की आधुनिकतम प्रणाली, पाठ्यक्रम आदि को भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को बरकरार रखते हुए 'गुरुकुल' में देखी जा सकती है।

उनका यह मानना था कि आर्थिक तंगी की वजह से योग्य बच्चों के शैक्षणिक विकास में गतिरोध नहीं आना चाहिए। इस भावना से प्रेरित होकर उन्होंने गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के बच्चों के लिए एक और स्कूल आरम्भ किया। आज सैकड़ों बच्चों को मुफ्त शिक्षा, पुस्तकें, पौष्टिक भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध हैं। भविष्य के श्रेष्ठ नागरिक पल्लवित किए जा रहे है।

उनके छोटे कद-काठी में अथाह एकीकृत शक्ति विद्यमान थी। सात हार्ट अटैक, दो हृदय शल्यक्रिया, एन्जियोप्लास्टी, मष्तिष्काघात भी उन्हें प्रतिदिन 8से 10 घंटे कार्य करने से नहीं रोक पाए। चाहे वह अनुभूति स्कूल निर्माण व संचालन कार्य हो या महान गांधी रिसर्च फाऊंडेशन हो, जिसे उन्होंने केवल इसलिए नहीं बनाया कि वह महात्मा गांधी की शिक्षाओं में व्यक्तिगत रूप से विश्वास रखते थे, बल्कि वह सुनिश्चित करना चाहते थे कि युवा पीढ़ी उन्हें नहीं भूले व उनके संदेश व कार्यों को जीवन में अपनाए।

अपनी अलौकिक भाषण शैली से जन-साधारण श्रोताओं को मुग्ध करने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। विषय चाहे कार्य संबंधी हो, राजनीतिक या सामाजिक हो, बगैर कोई कागज़, नोट्स आदि को सहायता के सिर्फ याददाश्त से आंकड़े, अवसर, प्रसंग आदि को उद्धृत करते हुए श्रोताओं की रुचि

बनाए रखते थे।

अपनी पिछली अमरीका यात्रा में ऐसी ही विद्वता व धैर्य से उन्होंने 'हार्वर्ड स्कूल ऑफ बिजनेस' में कृषि विषय पर एक घंटे से अधिक संबोधित किया। उनके संबोधन से प्रेरित होकर प्रोफैसर रे.ए. गोल्डबर्ग (जॉर्ज एम.मोफेट, प्रो. एग्रीकल्चर एंड बिजनेस इमेरिशस) उन्हें अपना भाई कहते थे। बाद में हार्वर्ड स्कूल ऑफ बिजनेस का प्रतिनिधि मंडल, जिसमें अन्य प्रोफेसर्स व डीन का समावेश था, जैन इरिगेशन जलगांव पधारे थे। हार्वर्ड स्कूल ऑफ बिजनेस के स्नातकीय पाठ्यक्रम में 'जैन इरिगेशन' केस स्टडी के रूप में पढ़ाया जाता है।

विभिन्न विषयों के प्रति वह समर्पित थे व उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं। 20 वर्ष पूर्व उनके द्वारा 'व्याधिग्रस्त सामाजिक रचना' विषय पर लिखी गई पुस्तक आज भी प्रासंगिक है।

उनकी जलसंग्रहण प्रबंधन पर लिखी हुई पुस्तक विद्यार्थियों व जनसाधारण के लिए पाठ्य पुस्तक के रूप में उपयोग की जा सकती है, क्योंकि यह विषय अपने-आप में पूर्ण प्रासंगिक है व विचार समझने में आसान है।

उनकी अलौकिक व अद्‌भुत प्रबंधन क्षमता से पांच महाद्वीपों में 10,000 से अधिक सहयोगियों के अथक परिश्रम से संस्थान दीर्घकालीन प्रगति पथ पर अग्रसर है। यह उनकी पुस्तक **'An Enterpreneur Deciphered'** और **'The Enlightened Enterpreneur'** में प्रतिबिंबित है।

उनकी लिखी हुई हृदयस्पर्शी कहानी 'ती आणि मी' (मराठी, हिन्दी व अंग्रेज़ी संस्करण) उनके अपनी धर्मपत्नी से संबंध के प्रति संभवत: ऐसा अनोखा, रोचक व वर्णनात्मक दस्तावेज़ है, जोकि नव-दम्पतियों और दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करने वाले दम्पतियों के लिए आशा, दिशा, उत्साहवर्धन, प्रेरणात्मक संदेश से ओत-प्रोत है। इस पुस्तक का तृतीय संस्करण हाल ही में प्रकाशित हुआ है। कुछ ही वर्षों में 1,20,000 से अधिक प्रतियां विक्रय हुई हैं।

श्री भंवरलाल जी (भाऊ) की अदम्य ऊर्जा और साहस ने युवा सहयोगियों और समकालीन व्यक्तियों को आश्चर्य चकित किया है। वे नई-नई तकनीक और नये साहसिक कार्य, नये उद्यम, जो समाज के लिए प्रभावी व लाभप्रद हों, अपनाने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। उनकी कम्पनी की यह स्वीकृत नीति है कि कोई भी ऐसा व्यवसाय जो किसी को व्यसनी या कमज़ोर करे और चाहे वह कितना भी मुनाफे वाला हो, कभी नहीं किया जाएगा। हमेशा वही व्यवसाय किया जाएगा जो समाज व समाज के कमज़ोर वर्ग के लिए सकारात्मक प्रभावशाली हो।

पर्यावरण के प्रति उनकी चिंता जैन धर्म के सिद्धांतों पर आधारित है, जो अहिंसा व प्रकृति के साथ जीने की शिक्षा देती है। उनका भगीरथ पराक्रम 'जैन हिल्स' को उपजाऊ और हरे-भरे स्वर्ग जैसा बनाना, लाखों पेड़ लगाकर उनको सींचना, देखभाल करना व कई एकड़ बंजर बीहड को उपजाऊ बनाना एक अनूठा कार्य है।

भाऊ का वर्षाजल संग्रहण, जलसंग्रहण क्षेत्र प्रबंधन एवं संरक्षण का उत्कृष्ट कार्य, खान्देश जैसे सूखा-ग्रस्त इलाके के कृषि इतिहास में मील का पत्थर बन गया है। कृषि के प्रति उनके इस अलौकिक योगदान के लिए विश्वविद्यालयों द्वारा उन्हें डाक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई है तथा कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। उनमें अत्यधिक सम्मानजनक 'क्राफर्ड रीड अवार्ड' सिंचाई तकनीक प्रसार के लिए दिया गया है। आज तक यह पुरस्कार एशिया महाद्वीप में केवल दो व्यक्तियों को प्रदान किया गया है। उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए राष्ट्र ने सन् 2008 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया है।

भाऊ ने जैन हिल्स पर एक कृषि संस्थान भी स्थापित किया है। जहां पर एग्रोनोमिस्ट व डाक्टरेट विशेषज्ञ देश-विदेश के कृषकों को प्रशिक्षण देने के लिए नियुक्त किए गए हैं।

उनके द्वारा सर्वोत्कृष्ट बायोटेक लैबोरेटरी भी स्थापित की गई है, जहां कृषि क्षेत्र के विभिन्न प्रयोग व अनुसंधान किए जाते हैं। इसके परिणाम स्वरूप कुछ वर्ष पूर्व अत्यंत उपयोगी केला, स्ट्राबेरी, अनार के टिश्युकल्चर पौधे कृषकों को उपलब्ध कराए जाते हैं। इन पौधों की अधिक उत्पादन क्षमता व गुणवत्ता से कृषकों के आर्थिक विकास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

भाऊ के ऐसे विचार एवं कार्यों के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर का मननशील प्रणेता माना जाता है।

इस अत्यंत उत्कृष्ट, स्वप्नद्दष्टा को बिदाई देते हुए हमारे दिलों में यह भाव है कि चाहे वह अब हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी परम्परा से प्राप्त अथक कार्य शैली, परिश्रम और पर्यावरण के प्रति लगन, प्रेम का बीज जो उन्होंने हम सब में रोपित किया है, सदैव पल्लवित रहेगा एवं वह इस रूप में हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

झरमल सिंह झोक हरी-हर

हार्वर्ड स्कूल ऑफ बिजनेस के स्नातकीय पाठक्रम में 'जैन इरिगेशन' केस स्टडी के रूप में पढ़ाया जाता है।

टूट भाईयों अमेरिका और एडवाइज़र पब्लीकेशनस ग्रुप जालन्धर की ओर से शोक प्रकट